प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 19.11.67

रिकार्ड–यह वक्त जा रहा है.....ओमशांति। रुहानी बच्चों ने गीत का अर्थ समझा। जिस्मानी बच्चे नहीं समझते हैं। रुहानी बच्चे ही समझ सकते हैं। बाप कहते हैं एक मिनट,सेकेंड पास होता है आयु कम होते जाते हैं। इस समय की तुम्हारी आयु बहुत वैल्युएबल है। एक सेकेंड भी तुम्हारा फाल्तू न जाना चाहिए ; परंतु सेकेंड व सेकंड कोई याद नहीं करते। बाप ने यह भी कहा है गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। गृहस्थ माना ऐसे नहीं विकार में रहना है। गृहस्थ माना बाल–बच्चों परिवार में रहना है। यहां इतने सब कैसे आये बैठेंगे। तुम बच्चे जानते हो इस समय हम ईश्वरीय परिवार में हैं। बाबा भी साथ में है। जब दूर रहते हैं फिर ऐसे तो नहीं कहेंगे बाबा साथ है। बाबा आबू में बैठा है। यहां तो बाप सम्मुख कहते हैं बच्चे सेकेंड व सेकेंड आयु कम होती जाती है। बाकी थोड़ा टाइम है। उनको सफल करना है। उठते–बैठते ,चलते–फिरते जितना हो सके याद में रहना है। भल बाप कहते हैं ऐसी स्थाई अवस्था पिछाड़ी में होगी। अब किसकी भी हो नहीं सकती। भल कोई कितना भी पुरुषार्थ करे ;परंतु हो नहीं सकता। बाप,टीचर,गुरू हमको पढ़ाते हैं। यह भी कैसे, बिल्कुल समझते नहीं। रुपये से एक पाई समझते हैं। तो पद भी पाई जैसे पावेंगे। उन्हों को पद आदि की कोई परवाह ही नहीं है। पिछाड़ी में जानेंगे बाप कौन है। अभी तो साधारण तन में है ना। बाप समझाते हैं बहुत जन्मों के अंत के जन्म में मैं प्रवेश करता हूं। और कोई कह न सके कि देह के सर्व सम्बंध छोड़ अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। बाप ही बच्चों को कहते हैं। बाकी दुनियां के मनुष्य इन बातों को क्या जानें?इसलिए बाबा बाहर जाने की भी छुट्टी नहीं देते ;क्योंकि हैं जैसे बंदर और बंदरियां। कुछ भी समझते नहीं। शंकराचार्य जो अपन को श्री श्री 108जगदगुरू कहलाते हैं ;परंतु बाप ने कहा है यह हिरण्याकश्यप है। आसुरी सम्प्रदाय है। उन्हों के फालोवर्स भी (ऐसे ठहरे)। बाप कहते हैं उन्हों को कुछ भी पता नहीं है कि यह दैवी सम्प्रदाय बन रहे हैं। तुम्हारे में भी बहुत हैं जिनको पता नहीं हैं कि हम क्या बन रहे हैं। नम्बरवार हैं ना। कितना डिससर्विस भी कर लेते हैं। क्रोध का भूत बड़ा भारी भूत है। यह भी बहुतों में है। 100प्रतिशत क्रोध का भूत देखना हो तो यहां देखो। सब अवगुण हैं। जैसे कि कुछ भी सुधरते नहीं। आपस में बात–चीत ऐसे करते हैं जैसे जहर फेंकते हैं। पिछाड़ी में सबको सा. होगा हम क्या पद पावेंगे। सजायें भी कोई कम थोड़े ही होती हैं। पाई–पैसे का भी पद नहीं पाय सकेंगे ;परंतु उन्हों को पद का भी परवाह नहीं है। जैसे कि जीते हुए मुर्दे हैं। चलन ऐसी है बात मत पूछो। अज्ञान काल में भी कोई को 5बच्चे होते हैं तो कहते हैं सच्चे2 बच्चे सिर्फ दो हैं, जो ही आज्ञाकारी हैं। यह बाप तो कहते हैं हमारे पास सैकड़ों ,हजारों हैं, जो फरमानबरदार अच्छे बच्चे हैं वह अपने सर्विस में मस्त रहते हैं। बाकी डिससर्विस में ही मस्त रहते हैं। बाहर सेंटर्स में भी ऐसे हैं। बहुत हैं जो डिससर्विस करते हैं। तंग करने वाले भी तो बहुत हैं ना। भावी ड्रामा की कुछ ऐसी है। बहुत मीठा,शांत,कम बोलना, रॉयल बोलना होना चाहिए। राजाएं कितना रॉयल होते हैं। राजाएं सारा दिन तिक2 नहीं करते। बहुत थोड़ा बोलते हैं। जैसे पादरी लोग घूमने जाते हैं, कितना सायलेंस में घूमने जाते हैं। क्राइस्ट या क्राइस्ट के बाप की याद में घूमने जाते हैं। यहां भी घूमने जाते हैं तो भी सिवाय पराई पचर के कुछ जानते ही नहीं। हड्डी वाले सर्विसेबुल बच्चों को तो देखने से ही दिल खुश होती है। बाप को तो खुशबूदार फूल चाहिए। कांटों को तो नहीं देखेंगे। बाप को तो फिर भी समझाना पड़ता है कुछ तो सुधरे। क्लास में आने की भी फजीलत चाहिए ना। बाप कहां से आये पढ़ाने। पहले तो तरफ आना चाहिए बाबा को हम कहां से बुलाते हैं। तुम रहते ही हो पतित दुनियां में। बुलाते हो हे पतित–पावन,दूर देश के रहने वाले आओ इस पतित–पुरानी दुनियां में। हमको आकर फूल बनाओ। यह लक्ष्मी–नारायण बनना कोई मासी का घर है क्या?विश्व का मालिक बनना है। कुछ भी समझते नहीं हैं तो पुरुषार्थ भी नहीं करते।

जैसे कि पुरुषार्थ ना करने की कसम उठाई है। बाबा तो रात–दिन कितना समझाते रहते हैं। बच्चों ,समय बहुत थोड़ा है। उमर घटती जाती है। 8/9वर्ष तो बाबा कहते हैं ;परंतु तैयारी तो जैसे की हुई ही पड़ी है। गुस्से को अंदर में दबाते रहते हैं। तुम जानते हो कि हमारे ही खातिर यह मिसाइल्स आदि सब तैयार हुए हैं। मनुष्य भी समझते जावेंगे। बच्चों को डायरैक्शन मिलता है फिर अमल में नहीं लाते हैं तो समझा जाता है कि शायद अभी देरी है। बाबा ने कहा है गीता का भगवान कौन यह अखबार में डालो। एरोप्लेन से गिराओ। गीता का भगवान शिव है यह भूलने से ही दुनियां की दुर्गति हुई है। भक्तिमार्ग तो है ही दुर्गति मार्ग। वो लोग तो समझते हैं कि भक्ति के बाद भगवान मिलता है। यह तो ठीक ही है। भक्ति जब पूरी होगी तो भगवान आकर भक्ति का फल देंगे। भगवान को ही तो फल देना है। श्री2 108जगत गुरुओं को तो नहीं देना है। सर्व का सदगति दाता है ही एक। फिर यह कहां से आये? ढेर गुरू हैं। आगाखान को भी गुरू कहते हैं। क्या वो सदगति करते हैं। अंधश्रद्धा है ना। कितना उनका मान है। आगाखान को प्रिंस भी कहते हैं। अब प्रिंस तो राजा का बच्चा होता है। यह तो सिर्फ साहुकार है इसलिए ही प्रिंस कहते हैं। कृष्ण को भी प्रिंस नहीं महाराजा कहना चाहिए। प्रिंस अक्षर तो अंग्रेजी का है। तुम्हारा अक्षर2 राइट निकलना चाहिए। प्रिंस तो कोई भी नहीं। राजाई भी है नहीं। अगर है भी तो वो टाइटिल खरीद किया हुआ है। सतयुग में तो कहते हैं महारानी–महाराजा। राम–सीता को राजा राम कहेंगे। यहां तो समझते कुछ भी नहीं है जो आता है सो बोलते रहते हैं। संस्कृत भाषा तो वास्तव में है नहीं। बाप संस्कृत में थोड़े ही सुनाते हैं। फिर तो सबको संस्कृत सीखने लिए बनारस कॉलेज में बैठना पड़े। अबलायें कैसे सीख सकेंगी?हिंदी भाषा तो कितनी सीधी है। बाप कहते हैं कि हम तो हिंदी में ही समझाते हैं। संस्कृत भाषा तो यह रथ ही नहीं जानता है तो शिवबाबा फिर कैसे बोलेंगे?जो रथ की भाषा होगी उसमें ही समझावेंगे। यह सब तुम बच्चों की समझानी की बातें हैं। जो यह जानते हैं वो ही बाप बताते हैं। वो ही भाषा चलती है। सिंधी भाषा हो तो और लोग तो आवें ही नहीं। सिंधी फिर भी मैनारिटी में है। हिंदी तो मैजॉरिटी में है। ऐसे भी नहीं है कि सतयुग में हिंदी ही होगी। वहां तो तुम्हारी अपनी ही भाषा होगी। बाप आया ,समझाया तो हिंदी भाषा का पार्ट पूरा हुआ। फिर तो जो वहां की भाषा होगी वो ही चलेगी। फिर रामराज्य में भाषा बदली हो जावे ऐसा हो सकता है। शायद एक ही भी चलती हो। समय पर जो होगा सो देखा ही जावेगा। बाबा पहले से ही नहीं बता देंगे। तुम चलते चलो। यह तो जानते ही हो कि टोटली विनाश तो होने का ही है। गाया हुआ भी है कि राम गयो रावण गयो.....कोई2 अक्षर निकल आते हैं। देवी–देवता धर्म भी प्रायःलोप है। बाकी चित्र है। अब तुम बच्चों को समझ में आता है कि इतना समय कम है हम डबल सिरताजधारी बने हैं। फिर इतना समय सिंगल ताज होगा। फिर नो ताज। अभी तो जो भी थोड़ा जरा.....मिलती है वो भी खतम हो जावेगा। नाम मात्र टाइटिल खरीद कर अपने को राजा कहलावे यह भी कैंसिल हो जावेगा। कहेंगे हम नहीं देंगे। फिर कोई कर ही क्या सकते हैं? कायदो को तो फिराते ही रहते हैं। दिन–प्रतिदिन नीचे गिरते ही जाते हैं। तुम बच्चों को तो एक्युरेट पता है। यह दुनियां जो कुछ भी अभी देखने में आती है वो तो गई ही कि गई। तुम्हारी आयु दिन–प्रतिदिन कम ही होती जाती है। याद से आयु बढ़ेगी। तंदुरुस्ती भी बनेगी। तुम जानते हो कि हम देवी–देवतायें बहुत ही तंदरुस्त थे। कब भी बीमार नहीं पड़ते थे। बाप कितनी सहज बातें बताते हैं कि बच्चे अपने को आत्मा समझकर याद में रहो। अब याद से ही तुम पतित से पावन बनेंगे। वो तो कह देते कि गंगा पतित–पावनी है। फिर कहते हैं कि पतित–पावन सीता–राम.....एक बात पर ही ठहरते नहीं हैं। शास्त्र आदि बहुत पढ़े हुए हैं ;परंतु अर्थ तो बुद्धि में कुछ भी नहीं है। सिर्फ कहते हैं कि शास्त्रवाद करो।

तुम कहते हो कि शास्त्र तो सभी हैं ही भक्तिमार्ग के। हम तो शास्त्रों का नाम ही नहीं लेते हैं। तो शास्त्रवाद हम कैसे कर सकते हैं?शास्त्रों को तो हम जानते हैं कि वो सब भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं। हम जानते हैं ;परंतु समझते भी हैं कि वो सारी भक्ति मार्ग की सामिग्री है। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। वो ही आकर ज्ञान देते हैं। यह है ही रुहानी नालेज। अगर नालेज ही नहीं मिलती तो तुम यहां पर क्यों आते?यह बहुत समझने की बातें हैं। आगे चलकर तो यह शंकराचार्य आदि सभी तुम बच्चों के आगे झुकेंगे। शिवाबाबा के आगे नहीं। वो तो गुप्त है ना। तुमको ही मैसेज देना है। अहो प्रभु तेरी लीला कहते हैं ;परंतु प्रभु क्या करते हैं वो तो जानते ही नहीं हैं सिवाय तुम ब्राह्मणों के। प्रभु की गत–मत कैसे न्यारी है सो तो तुम्हीं जानते हो। भगवान पढ़ाते हैं तो पढ़ाई को ही पूरी रीति लग जाना चाहिए ना या कि दूसरे धंधे आदि में लगना चाहिए। समझते हो ना वो नालेज अच्छी वा यह नालेज अच्छी जिससे ही तुम विश्व का महाराजकुमार बनते हो। जरूर कहेंगे कि यह नालेज अच्छी है। फिर भी पढ़ते नहीं हैं तो समझा जाता है कि इनकी तकदीर में ही नहीं है। समझे भी हैं कि यह नालेज हमको कितना उंचा बनाती है। उस पाई–पैसे की नालेज से तो अंधे ही बनते हैं। तुम सबको रास्ता बताते हो। मनुष्य तो रिंचक भी नहीं जानते हैं। तुम्हारे में यह बहुत हैं जो कि ड्रामा को ही नहीं जानते हैं। कैसा तो वंडर है। जरा सा भी पुरुषार्थ नहीं करते हैं। देहअभिमान में जो फंसे रहते हैं तो वो क्या जाने इस नालेज को। जिनके पास धन बहुत है कहते हैं कि वो तो स्वर्ग में ही बैठे हैं। वो क्या जाने नर्क और स्वर्ग को। भगवान बाप पढ़ाते हैं तो उनकी तो कितनी वैल्यु रखनी चाहिए। शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। हम उनके स्टुडेंट्स हैं यह भी याद रहे तो भी कितनी उन्नति हो जावे। कोई तो एक मिनट भी याद नहीं करते हैं। तब बाबा कहते रहते हैं कि समय चलता जा रहा है। अपनी उन्नति करते रहो। बात–चीत तो ऐसे करते हैं जैसे कि फूंक देते रहते हैं। शिवबाबा को तो फूंक नहीं लगती है। फूंक लगती ही है जिसमें कि शिवबाबा प्रवेश करते हैं। बाप ही आकर इनमें पढ़ाते हैं। कितनी बड़ी आसामी है। इनका यादगार सोमनाथ का मंदिर तो देखो कितने हीरों–जवाहरों से बनाया हुआ है। कितने तो जवाहरात थे। सोना–चांदी तो उस समय बिल्कुल ही डैम–चैप था। सोने–चांदी के तो मकान बनते थे। मंदिर से ही कितने जवाहर ले गए। मकानों में भी हीरे–मोती जड़े हुए थे। दिल में खयाल आता है कि क्या वो.....फिर होगा?हम अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं विश्व का मालिक बनने के लिए। हमारे पास फिर कितना धन होगा। हीरों–मोतियों से तो बच्चे खेलते होंगे। मंदिरों में हीरे–जवाहर लगाये हैं तो जरूर महलों में भी होंगे। ऐसे विश्व का तो तुम मालिक बन रहे हो। कितनी स्थाई खुशी रहनी चाहिए। सुनने–देखने से ही दिल ठार हो जाती है। हम मालिक थे फिर अब बन रहे हैं। तुम बच्चों को तो अथाह खुशी होनी चाहिए। अभी उतनी कापारी खुशी नहीं है। माया सामना करती रहती है। देह अहंकार भी बहुत आ जाता है। माया भी रुस्तम से ही रुस्तम होकर लड़ती है। पहलवान ही तो पहलवान से लड़ेंगे ना। इसलिए बहुत खबरदार होकर रहना। गम्भीर होकर रहना है। माया तो तैयार ही बैठी रहती है। देखेगी कौन योग में पक्का होकर बैठा है उसी पर झट वार करेगी। तुम खुद भी कहते हो कि पारे मिसल याद खिसकती रहती है। पद भी तो बहुत उंचा है ना। कौन यह पद पा सकेंगे झट पता पड़ जाता है। अभी तुम समझते हो कि माया कितनी प्रबल है। कोई को भी ऐसे हरा लेती है तो जो कि एकदम ही पट में पड़ जाते हैं। इसमें कम्पैनियन आदि की भी कोई बात नहीं है। हमको तो देह सहित ही सभी कुछ भूलना है। कुछ भी याद नहीं रहे सिवाय एक बाप के। कम्पैनियन बनाया तो उसकी भी याद बैठ जावेगी। भूल नहीं सकेंगे। यहां पर तो बाप कहते हैं कि सब कुछ भूलते ही जाओ। पिछाड़ी में तो शल्ला कोई की भी याद नहीं रहे तो ही प्राण तन में से निकले। ईतनी उंची मंज़िल है। जरा भी याद आई तो रामचंद्र की तरह फेल हुआ। बाप युक्तियां तो बहुत बताते हैं ;परंतु अमल में अभी नहीं लाते हैं। ओम।